दिनांक 18 अप्रैल, 2010 को लखनऊ में कबीर शांति मिशन की 20वीं वर्षगाँठ पर आयोजित समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

———————

देवियों और सज्जनों,

हमारे लिये यह प्रसन्नता की बात है कि आज हमें ऐसे महान व्यक्तित्व के नाम से जुड़े मिशन में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, जिन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों के मेल–मिलाप, भाईचारे और साम्प्रदायिक सौहार्द की अनूठी छाप छोड़ी है। मगहर स्थित

उनकी समाधि व मजार आज भी कौमी एकता का सन्देश देती है, जहाँ सभी धर्म के लोग सिर्फ दर्शनार्थी या श्रद्धालु बनकर आते हैं।

हमारा देश ऋषि–मुनियों एवं साधु–संतों का देश रहा है। यहाँ असंख्य महापुरूषों ने जन्म लेकर पीड़ित और शोषित मानवता के कल्याण हेतु प्रेम–एकता, वसुधैव कुटुम्बकम तथा धर्म–निरपेक्षता का पावन सन्देश दिया है। वास्तव में संत–महात्माओं की पतितपावनी वाणी वह अमृत है जो हमारे चारो ओर व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मद जैसे विकारों से हमारी रक्षा करती है।

काशी में जन्मे कबीर दास की वाणियों और धर्मोपदेश से समाज का हर वर्ग प्रभावित था। हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों के लोग उन्हें अपना हितैषी समझते थे। वे संत और कवि तो थे ही, एक समाज सुधारक भी थे। वे जहाँ भी जाते थे, वहाँ सभी वर्गो के लोग उनके अनुयायी हो जाते थे। कबीरदास ने जीवन पर्यन्त समाज को नई रोशनी देने, साम्प्रदायिक भेदभाव मिटाने, अन्ध–विश्वासों और रूढ़ियों को तोड़ने का कार्य किया।

कबिरा इस संसार में भांति–भांति के लोग ।
सबसे हिलमिल चालिये नदी नाव संजोग ।।

कबीर दास मानवता प्रेमी संत थे। वे भेदभाव की संकीर्णता से ऊपर उठकर उदात्त भावनाओं का संदेश अत्यंत सहज वाणी में देते थे। उन्होंने समता मूलक समाज की परिकल्पना की थी, जिसमें ऊँच–नीच की कोई मान्यता नहीं थी। यह विडम्बना ही है कि ईश्वर को प्राप्त करने के सहज रास्तों को भी मुश्किल कर दिया गया है। उन्होंने कहा था कि–

जाति–पांति पूछे नहिं कोई।
हरि का भजे सो हरि का होई।।

इस प्रकार कबीर दास जी साधना के क्षेत्र में युग गुरू और साहित्य रचना के क्षेत्र में युगदृष्टा थे। सम्प्रदाय चाहे जो हो और

जैसा हो उसकी अनुगति की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं थी, बल्कि उसे वे एक ढकोसला मानते थे। उन्होंने तमाम सामाजिक कुरीतियों, अंध–विश्वासों, रूढ़ियों, विविध विधानों और कर्मकाण्ड के आडम्बरों का खुलकर विरोध किया। वे आदर्शवादी नहीं यथार्थवादी थे।

कबीर को जनसामान्य से जुड़ा भक्तिकालीन कवि कहना अतिश्योक्ति न होगी। उन्होंने जो कुछ देखा–सुना व अनुभव किया, उसे सीधे–सरल शब्दों में अपनी वाणियों में उतार दिया। उन्होंने कहीं भी ईश्वर के अस्तित्व को नकारा नहीं है, परन्तु ईश–भक्ति को लेकर जो मिथ्या धारणाएं समाज में व्याप्त थीं, उन पर कठोर प्रहार किया।

कबीर दास जी के दोहे पढ़िये तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे ये दोहे मात्र दोहे न हो, बल्कि समाज सुधार व चरित्र निर्माण की कार्यशाला हो। उन पर गहराई से नजर डाले तो पता चलता है कि कबीर दास उस समय समाज में व्याप्त कुरीतियों से कितना आहत थे। उनके दिखाये गये रास्ते वास्तव में आज की जरूरत है। वस्तुतः कबीर की वाणी मनुष्य जीवन की सार्थकता का मूलमंत्र है। कबीर दास जी विनम्रता के पक्षधर थे, यह उनके इस दोहे से बहुत साफ है–

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौदे मोए।
एक दिन ऐसा आवे जब माटी रौंदे तोए।।

हमें उन्नत विचारों, धर्म शास्त्रों के ज्ञान उपदेश से प्रेरित होकर देखना चाहिए कि क्या वास्तव में हम उस रास्ते पर चल पा रहें है या भटक गये हैं। मुझे लगता है आज मनुष्य समूहों में खो गया है। सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र अनेक प्रकार के साधनों द्वारा हमने जीवन के एक अति–सीमित रूप को स्वीकार कर लिया है। हमारा जीवन बहुत कुछ यांत्रिक हो गया है और जीवन की जो शुद्धता थी, दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा थी वह कहीं दब गयी है।

इस अवसर पर मैं इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि जब तक समाज में जातिवाद, छुआ–छूत, रंग–भेद और हिन्दू–मुस्लिम विभेद बना रहेगा। तब तक कबीरदास जी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

वस्तुतः आज देश को कबीर जैसे निर्भीक, साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञा वाले संतों की आवश्यकता है, जो समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त द्वेष को मिटाकर अनेकता में एकता और सर्वधर्म समभाव की संस्कृति को विकसित कर सकें। इसी से देश और समाज का उत्थान सम्भव होगा और ''वसुधैव–कुटुम्बकम'' की परिकल्पना साकार हो सकेगी।

मुझे ख़ुशी है कि कबीर शांति मिशन संत कबीर के उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने की दिशा में प्रयासरत है। इस दिशा में मिशन को पर्याप्त सफलता भी प्राप्त हो हो रही है। मैं चाहूँगा कि कबीर शांति मिशन से जुड़े महानुभाव इसी प्रकार अपना सहयोग देते रहें।

धन्यवाद–नमस्कार।